Saptang Theory of Kautilya

भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में कौटिल्य ने एक नियत परम्परा का प्रतिपादन किया वे अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र लोकप्रशासन, कूटनीति के अद्भुत विधान थे। उनकी तुलना पाश्चेम के राजनीतिक चिंतको हॉब्स तथा Machiavelli के साथ की जाती है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन की दो परम्पराएं रही है। "एक आदर्शवादी" जिसमें बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य तथा अर्वाचीन में विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती महात्मा गांधी के नाम उल्लेखनीय है।

दूसरी परम्परा, शक्ति की साधना की रही है इसमें शुक्र मनु तथा आधुनिक काल में सुभाष चन्द्र बोस के नाम उल्लेखनीय है। इस विचार धारा के प्रतिपादक शुक्र तथा कौटिल्य थे। अमेरिकी विद्वान ने कहा था कि "राजनीति का उद्देश्य शक्ति की प्राप्ति है"। "Morgenthau" आज से लगभग तीन हजार वर्ष पहले कौटिल्य ने भी अपनी पुस्तक "अर्थशास्त्र" में Power approach या Political realism का प्रतिपादन किया था उसने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि जिस प्रकार लोहे को बिना लोहा गर्म किए दूसरे लोहे को काटना असंभव है उसी तरह से दो राज्यों के बीच में शांति की स्थापना का एक ही मार्ग है, वह है शक्ति"।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्य की उत्पत्ति प्रकृति एवं क्रियाओं की विवेचना नहीं करता है। राज्य की उत्पत्ति में जो सिद्धान्त मनु का था वही सिद्धान्त कौटिल्य ने भी माना है। कौटिल्य राज्य एवं राजा की उत्पत्ति साथ-साथ मानते है, दोनों में अन्तर केवल यह है कि जहां मनु ने दैवी सिद्धान्त को स्वीकार किया है वहीं कौटिल्य संविदा सिद्धान्त को मान्यता देते है।

कौटिल्य राज्य को एक अनिवार्य संस्था मानते है, उनका मानना है कि राज्य की स्थापना के पूर्व एक समय ऐसा था, जिसमें मनुष्य जिवन के अधिकार को शक्ति पर आधारित था। सबल कमजोरों को सताते थे, निर्बल अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए लालायित रहते थे।

इसप्रकार जीवन की समस्या तथा अन्य समस्याओं के कारण प्रजा ने मिलकर मनु को राजा बनाया। इसप्रकार राज्य मनुष्यों को प्राकृतिक असहनीय कठिनाईयों से छुटकारा दिलाने की आवश्यक संस्था है। "गार्नर" ने राज्य के चार आवश्यक तत्व जनसंख्या निश्चितभू-भाग, सरकार तथा सम्प्रभुता बताया है उसी प्रकार कौटिल्य ने राज्य के सात आवश्यक तत्वो की चर्चा की है, स्वामी अमात्य जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड एवं मित्र। कौटिल्य ने इसे राज्य की प्रकृति और अंग दोनो कहता है, कौटिल्य के द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त को राज्य का सप्तांग सिद्धान्त कहा जाता है।

"मित्र" को राज्य का आन्तरिक संगठन का तत्व नही मानता, "मित्र" का उल्लेख विदेशनीति के ध्यान में रखकर किया गया है, आन्तरिक संगठन की दृष्टि से राज्य के मुख्य छः तत्वो की व्याख्या कौटिल्य ने प्रशासन के दृष्टिकोण से की है।

1. स्वामी (The king) :— कौटिल्य ने स्वामी को राज्य का राजा कहा है राजा राज्य का प्रधान होता है। राज्य की सफलता राजा के चारित्रिक गुण एवं नीति पर निर्भर करती है। कौटिल्य राजतंत्र शासन प्रणाली का प्रबल समर्थक है। वस्तुतः कौटिल्य के राज्य में राजा ही शासन की धूरी है, राजा ही शासन संचालन में सक्रिय रूप से भाग लेकर शासन को गति प्रदान करता है। अतः कौटिल्य ने राजा के आवश्यक गुणो योग्यताओं, नीतियों आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कौटिल्य के अनुसार राजा को राजा का कुलीन, धर्मनिष्ठ सत्यवादी, विवेकी, दूरदर्शी, कृतज्ञ इत्यादि गुणो से सम्पन्न होना चाहिए। उसे काम, क्रोध, मोह, लोभ और दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। उसे अपने राजकोष की वृद्धि पर भी ध्यान देना चाहिए। राजा को पूर्ण रूप से शिक्षित होना चाहिए क्योंकि जैसप्रकार घुन लगी लकडी स्वतः समाप्त हो जाती है उसी प्रकार अशिक्षित राजा का कुल भी स्वतः नष्ट हो जाता है। राजा को दीन, हीन, अपंग आदि की सहायता करनी चाहिए एवं विपत्ती के समय प्रजा का निर्वाह करना चाहिए। संक्षेप में कौटिल्य के अनुसार राजा को दो मुख्य कर्तव्य होते है, प्रथम उसे अपने प्रजाजनों के हित और उसके सुख पर पूरा ध्यान देना चाहिए द्वितीय दूसरे राज्यों के क्रिया कलापों पर ध्यान रखते हुए अपने राज्य पर किसी प्रकार का बाहरी खतरा उत्पन्न न हो इसपर भी ध्यान देना चाहिए।